पाठ - 1
पाठ का नाम - 'जीवन नहीं मरा करता है'
विषय - हिन्दी (कविता)
कक्षा - आठ (VIII)
शिक्षक का नाम - प्रवीण कुमार राय

'जीवन नहीं मरा करता है' कविता 'श्री गोपालदास नीरज' द्वारा लिखी गई है।

कवि कहते है कि कुछ किसी मनुष्य के जीवन की अगर कोई भी इच्छा की पूर्ति न हो। जिस तरह से कुछ खो जाने पर या गलत होने पर, रोने या सपनों के टूटने से जीवन का अंत नहीं होता।

कवि कहते है कि सपना तोय मात्र आँख का पानी है जो बहता है और उसका टूटना मानो कच्ची नींद से जागना अर्थात् आँखें मूंद कर सपने देखना गलत और आँख खुलने पर बह जाना और भी गलत।

कवि आगे कहते है कि चाहे कुछ भी हो चाहे सब बिखर जाए पर रोना कदापि नहीं अन्यथा ये जीवन नरक लगेगा। कुछ दीपक के बुझ जाने से आँगन अर्थात् घर मर नहीं जाता, ठीक उसी प्रकार हर दिन बदलने या कुछ खिलौनों के गुम हो जाने से बचपन नहीं मरता, बस रोज के दिन की भाँति कुछ नया आता है।

कवि आगे कहते है कि पनघट अर्थात् वह स्थान जहाँ लोग पानी भरने जाते हैं। पानी भरने के लिए जब औरतें जाती है तब कई बार उनकी गगरियाँ फूट जाती है फिर भी पनघट पर चिंता की कोई

MARCH
W	T	F	S	S
	01	02	03	04
07	08	09	10	11
14	15	16	17	18
21	22	23	24	25
28	29	30	31	

शिकन नहीं आती है। जिस प्रकार कितनी नौकाए तट पर डूब जाती है लेकिन तट पर फिर भी वैसी ही चहल - पहल लोगों का सदा ही मौजूद रहता है।

कवि कहते है कि माली ने उपवन के सारे फूल चुन लिए किन्तु वह फूलों की सुगंध को न लुट सका। तूफानों ने भी छेड़ा किन्तु कितनी ही आंधी आई, पर धूल की खिड़की बंद न हुई। अर्थात कभी मौसम का बदलाव हो, कभी उम्र का ताप कभी चेहरों का पर याद रहे, दर्पण कभी नहीं बदलता।

1 जीवन नहीं मरा करता है

जानने योग्य

गोपालदास 'नीरज' जी का जन्म 4 जनवरी सन् 1924 को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में हुआ था। इन्होंने कविताओं के साथ-साथ फिल्मों के लिए कई लोकप्रिय गीत भी लिखे हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने इन्हें हिन्दी की वीणा का नाम दिया था। उल्लास, आनंद और ऊर्जा की पवित्र पयस्विनी इनके गीतों में अपने पूरे वेग से बहती दिखाई देती है। इनकी कविताएँ मर्मस्पर्शी और सरल भाषा में लिखी हुई हैं। सरकार द्वारा सन् 1991 में इन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–

'प्राण गीत', 'आसावरी', 'नीरज की गीतिकाएँ', 'दर्द दिया', 'कुछ दोहे नीरज के', 'गीत-अगीत' आदि।

चर्चा के लिए प्रश्न

- मनुष्य को अपना जीवन किस प्रकार जीना चाहिए?

प्रस्तावना

प्रस्तुत कविता हमें निराशा से उबरने का संदेश देती है। इस कविता के द्वारा कवि ने यह समझाने का प्रयास किया है कि चाहे कितनी भी बाधाएँ आए, संगी-साथी, सपने सब छूट जायें परन्तु जीवन तो निरंतर चलता रहता है। इसलिए हमें प्रत्येक समस्याओं का सामना करके आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया है।

छिप-छिप अश्रु बहानेवालो!
मोती व्यर्थ लुटानेवालो!
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।
सपना क्या है? नयन-सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी।
गीली उमर बनानेवालो!
डूबे बिना नहानेवालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
माला बिखर गई तो क्या है?
खुद ही हल हो गई समस्या।
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई समस्या।
रूठे दिवस मनानेवालो!
फटी कमीज़ सिलानेवालो!
कुछ दीयों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल ज़िल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती।

वस्त्र बदलकर आनेवालो!
चाल बदलकर जानेवालो!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पर पनघट पर।
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल-पहल वैसी है तट पर।

तम की उमर बढ़ानेवालो!
लौ की आयु घटानेवालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की।
तूफानों तक ने छेड़ा पर,
खिड़की बंद न हुई धूल की।

नफरत गले लगानेवालो!
सब पर धूल उड़ानेवालो!
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

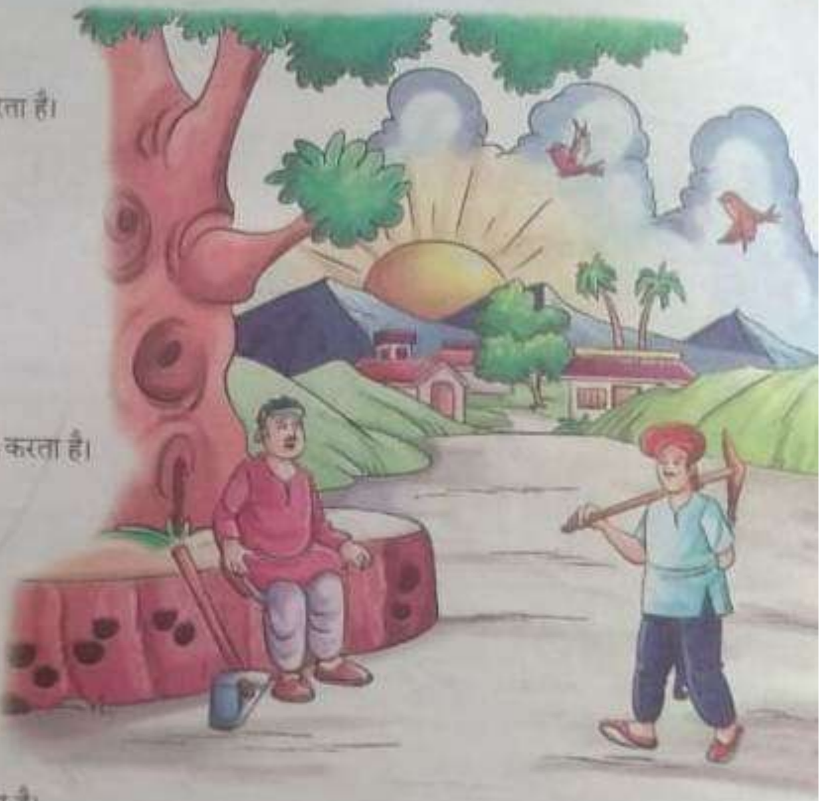

–गोपालदास 'नी

शब्दार्थ अश्रु- आँसू; व्यर्थ- बेकार; नयन- आँख; पोथी- कागजों की गड्डी, बड़ी पुस्तक; गगरी- मटका; किश्ती- नाव; तम- अंध
दर्पण- शीशा।

प्रश्न प्रहर

मौखिक प्रश्न

1. उपवन को किस बात का फर्क नहीं पड़ता है? पतझड़
2. दीयों के बुझ जाने के विषय में क्या बताया गया है? कुछ दीयों के बुझने से जीवन न मरता है।
3. श्री गोपालदास नीरज जी के जीवन पर प्रकाश डालिए।
4. अपने शब्दों में कविता का अर्थ समझाइए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. कुछ सपनों के मरने से क्या नहीं मरता है?

अ. जीवन ✓ ब. आँगन स. पतझड़

2. आँसू नीलाम होने पर क्या पूरी हो जाती है?

अ. माला | ब. समस्या | स. जीवन

3. 'शिकन' शब्द का क्या अर्थ है?

अ. चिंता की रेखा | ब. प्रसन्नता | स. दुख

4. कविता में धूप की धोती कौन पहनती है?

अ. आँख | ब. कमीज | स. सुबह

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. कुछ पानी के बह जाने पर सावन नहीं मरा करता है।
2. खुद ही हल हो गई समस्या।
3. वस्त्र बदलकर आनेवालो, चोला बदलकर जानेवालो।
4. शिकन न आई पर पनघट पर।
5. खिड़की बंद न हुई धूल की।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

1. "जीवन नहीं मरा करता है" किस प्रकार की कविता है?
2. बचपन नहीं मरने के विषय में क्या बताया गया है?
3. 'खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर, केवल जिल्द बदलती पोथी' से कवि का क्या आशय है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(घ) निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर दीजिए–

1. कवि के अनुसार सपना क्या है?
2. 'माला बिखर गई तो क्या?' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है?
3. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(ङ) निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–

1. कितनी बार गगरियाँ फूटी
शिकन न आई पर पनघट पर।
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल पहल वैसी है तट पर।

2. लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की।
तूफानों तक ने छेड़ा पर,
खिड़की बन्द न हुई धूल की।

(क) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

1. नयन	नेत्र	नयन	लोचन
2. रात	रात्रि	निशा	रजनी
3. फूल	पुष्प	सुमन	कुसुम
4. उपवन	बगीचा	बगिया	बाग
5. दर्पण	शीशा	आईना	आरसी
6. चाँदनी	कौमुदी	ज्योत्स्ना	चंद्रिका

(ख) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

1. जीवन	मरण	2. सोना	जागना
3. कच्चा	पक्का	4. जवानी	बुढ़ापा
5. रात	दिन	6. घटना	बढ़ना
7. सुगंध	दुर्गंध	8. नफ़रत	प्रेम
9. अंधकार	प्रकाश	10. समस्या	समाधान

भाषा की बात

- वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। शब्दों के भेदों का वर्गीकरण कई आधार पर किया जाता है।
- तत्सम और तद्भव शब्दों का वर्गीकरण उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर किया जाता है।
- **तत्सम शब्द**– संस्कृत के वे शब्द जो हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।
  जैसे– निद्रा, पुष्प, रात्रि, मृत्यु, अग्नि आदि।
- **तद्भव शब्द**– संस्कृत के वे शब्द जो हिंदी शब्दावली में परिवर्तित होकर प्रयुक्त किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।
  जैसे– मोर, किवाड़, दाँत, खंभा, कौआ आदि।
- **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए–**

1. सपना	स्वप्न	2. आँख	नेत्र
3. आँसू	अश्रु	4. दिन	दिवस
5. नींद	निद्रा	6. उमर	आयु
7. रात	रात्रि	8. मोती	मौक्तिक
9. नाव	किश्ति	10. घड़ा	मटका

- निम्नलिखित शब्दों में तत्सम व तद्भव शब्दों को छाँटकर उनके उचित नाम के नीचे लिखिए–

अश्रु, सपना, दीया, मुखड़ा, नयन, जिल्द, गंध, किवाड़, रात्रि, कर्म, निद्रा, गगरी, किरीट, उजाला, मौक्तिक, उपवन, नफरत, दर्पण, मृत्यु, मुखड़ा

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	सपना	मौक्तिक	गंध
रात्रि	दीया	दर्पण	किवाड़
कर्म	मुखड़ा	मृत्यु	उजाला
निद्रा	नयन	उपवन	नफरत
किरित	जिल्द	मुखड़ा	गगरी

(क) 'जीवन अनमोल है, हमें इसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए'। इस पर परिचर्चा कीजिए।

(ख) परिवार, साथी, सपने हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

अनुमान एवं कल्पना

(क) कल्पना कीजिए यदि आपका सबसे प्रिय मित्र आपसे दूर हो जाए तो आपके जीवन में क्या बदलाव आएगा?

(ख) "हर इंसान के जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं, जब वह हालात से जूझता हुआ दिखाई देता है। कुछ लोग अपनी हिम्मत और जज्बे से समय को बदलकर अपना बना लेते हैं; तो कुछ टूटकर बिखर भी जाते हैं। किन्तु जीवन के प्रति सही और सकारात्मक सोच रखी जाए तो सभी मुश्किलों से पार पाना संभव है।" अनुमान लगाकर बताइए आपने अनुसार यह कथन कितना सही है?

कुछ करने को

(क) अपने जीवन की किसी दुखद घटना पर एक कहानी लिखिए।

(ख) "अन्य लोग आपसे तभी प्रसन्न होंगे जब आप उनसे अपने बारे में नहीं, बल्कि उनके बारे में बात करेंगे।" इस बात पर विचार कीजिए तथा दूसरों को भी समझाने का प्रयास कीजिए।

पाठ - 1

लघु उत्तरीय प्रश्न

(ग) 1. यह कविता हमें जीवन में निराशा से निकालकर, आशा की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है।

(ग) 2. बचपन नहीं मरने के विषय में यह बताया है कि जीवन में कुछ खिलौने के खो जाने से बचपन समाप्त नहीं हो जाता है।

(ग) 3. कवि का आशय है कि मनुष्य यहां पर कुछ भी नहीं खोता है बल्कि जीवन के मूल्यों में ही बदलाव होते हैं अर्थात् जिस पोथी के ऊपर जिल्द

18 Sunday

का परिवर्तन होता है।

पाठ - 1

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(ख) 1. कवि के अनुसार सपना 'नयन-सेज' पर सोया हुआ आँख का पानी है अर्थात जब हम सोते समय अपनी आँखों को पलकों से ढकते है तो क्षण भर बाद ही एक चित्र उभर आता है। यही स्वप्न के रूप में हमारे सम्मुख रहता है।

(ख) 2. इस पंक्ति से कवि का तात्पर्य है कि अगर माला टूटकर बिखर गई तो क्या? मत रूप का विश्वास मे नही टूटना चाहिए। तभी जाकर मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है।

(घ) 3. कविता का शीर्षक 'जीवन मरा नहीं करता है' रखने का मुख्य कारण यह है कि इस कविता में कवि 'जीवन' के माध्यम से समाज में परिवर्तन की भावना को दर्शाता है। कवि ने हमें जीवन में निराशा से उबरने तथा प्रत्येक समस्याओं का सामना करने के लिए प्रेरित किया है। 'जीवन मरा नहीं करता है' शीर्षक कविता का मुख्य विषय को अभिव्यक्त करता है जिसके कारण इसे एक सार्थक शीर्षक कहा जा सकता है।

MARCH
M T W T F S S

शिक्षक का नाम - प्रवीण कुमार राय
JANUARY 2018
19 Friday
विषय - हिन्दी
पाठ का नाम - 'जिस समाज में तुम रहते हो'
कक्षा - आठ

प्रश्न - (i) प्रस्तुत कविता के कवि का नाम बताइए।

(ii) कवि ने समाज की व्याख्या किस प्रकार की है?

(iii) मनुष्य को समाज की शक्ति क्यों कहा गया है?

(iv) कवि के अनुसार जीवन की क्या परिभाषा है?

(v) कवि ने मनुष्य के सामने, समाज - जीवन का प्रतीक होने की क्या शर्तें रखी हैं,

(vi) भावार्थ स्पष्ट कीजिए -

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि तुम उसकी सदा सुनिश्चित
अनुपेक्षित आवश्यकता हो
जैसे किसी मशीन में लगे बहु
कलपुर्जों में
कोई भी कलपुर्जा हो
तो अच्छा है।

JANUARY

M	T	W	T	F	S
01	02	03	04	05	06
08	09	10	11	12	13
15	16	17	18	19	20
22	23	24	25	26	27
29	30	31			

शिक्षक का नाम - प्रवीण कुमार राय
JANUARY
विषय - हिन्दी
Saturday 20
पाठ का नाम - 'सदाचार का तावीज'
कक्षा - आठ

प्रश्न :- (i) साधु ने राजा को क्या समझाया

(ii) घूस देने पर कर्मचारी ने राजा से क्या कहा ?

(iii) राज्य के अखबारों में क्या खबर छपी थीं ?

(iv) दूसरी बार राजा ने कर्मचारी का हाथ पकड़कर क्या कहा ?

(v) विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार का स्वरूप कैसा बताया ?

(vi) राजा को मंत्री का सुझाव कैसा लगा और उन्होंने क्या किया ?
Sunday 21